



International Journal of Creative Research and Publications

Double Blind Peer Reviewed Journal



Research Article

माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. चन्द्रकान्त शर्मा ^{1*}, ममता मीणा ²

¹ शोध निर्देशक, शिक्षा विभाग अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

² शोधार्थी, शिक्षा विभाग अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * डॉ. चन्द्रकान्त शर्मा

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.22846287>

सारांश

भारतीय शिक्षा आयोगों ने शिक्षा में मूल्यों की कमी बताकर उसे मूल्यों से पर्याप्त रूप से जोड़ने की बात कही तथा इस विषय में अपने अनेक सुझाव प्रस्तुत किये। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मूल्य परक शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया। विभिन्न आयोगों की सिफारिशों एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन.सी.टी.ई. की योजनाओं को देखते हुए वर्तमान शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक मूल्यपरक होना चाहिए परन्तु समाज में भ्रष्टाचार, कुरीतियाँ, शोषण आदि प्रतिदिन व्यापक रूप में दृष्टिगत होती है। इसी विसंगति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता को जिज्ञासा हुई कि प्रस्तुत शोधकार्य द्वारा विद्यार्थियों में विद्यमान मूल्यों के बारे में पता लगाया जाये, जिससे कि उनकी वर्तमान स्थिति को समझकर प्रभावी मूल्यों के निर्माण का अध्ययन करने के लिए वर्तमान शोध समस्या का चयन किया गया।

निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में विद्यार्थियों के कुल मूल्य एवं विभिन्न आयामों सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक मूल्य एवं सुखवादी मूल्य के प्राप्तांकों पर माध्यमिक विद्यालयों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है। माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में विद्यार्थियों के मूल्य संबंधी विभिन्न आयामों सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक मूल्य के प्राप्तांक औसत से अधिक है। सुखवादी मूल्य आयाम के औसत प्राप्तांक से कम है।

Manuscript Information

- ISSN No: 3139-6313
- Received: 13-08-2026
- Accepted: 12-09-2026
- Published: 19-09-2026
- IJCRP:1(5); 2026: 84-87
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

शर्मा च, मीणा म. माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन. Int. J. Creative Res. Publ. 2026;1(5):84-87.

Access this Article Online



www.ijcrp.in

मुख्य शब्द : माध्यमिक विद्यालय, मूल्य।

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा प्रक्रिया के तीन प्रमुख अंगों- शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम में, शिक्षक का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया की धुरी शिक्षक होता है। उसके निर्देशन के अभाव में विद्यार्थी- समाज ज्ञानार्जन की उचित दिशा का अनुसरण नहीं कर सकता। पाठ्यक्रम को सरस और बोधगम्य बनाने में शिक्षक की भूमिका प्रमुख होती है। शिक्षक, शिक्षा प्रक्रिया को देश-काल के अनुरूप सही दिशा प्रदान करते हैं। एक शिक्षक की भूमिका निर्धारित पाठ्यक्रम को समाप्त करने से लेकर भावी नागरिकों के सर्वाङ्गीण-विकास तक होती है। इस प्रकार व्यक्ति-निर्माण से लेकर राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका अनिवार्य है। इसी कारण गुरु को प्राचीन काल से ही देवत्रय से भी उच्च स्थान प्रदान किया गया है-

गुरू ब्रह्म गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020), जिसे 29 जुलाई 2020 को भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था, भारत की नई शिक्षा प्रणाली के दृष्टिकोण को रेखांकित करती है। नई शिक्षा नीति 2020 ने पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, की जगह ले ली है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति माध्यमिक शिक्षा से उच्च शिक्षा के साथ-साथ ग्रामीण और शहरी भारत दोनों में व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए एक व्यापक रूपरेखा तैयार करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य 2030 तक भारत की शिक्षा प्रणाली को बदलना एवं राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त करना है और यह नीति 2020 भारत को बदलने में सीधे प्रकार से योगदान प्रदान करती है और भारतीय लोकाचार में निहित शिक्षा प्रणाली को देखती है। इसका उद्देश्य धर्म, लिंग, जाति या पंथ के किसी भी भेदभाव के बिना, सभी को बढ़ने ने और विकसित होने के लिए एक समान मंच प्रदान करना और सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके मौजूदा जीवन्त ज्ञान समाज को बनाए रखना और उसकी देखभाल करना है। यह भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाने की दिशा में भी एक कदम है। इस नीति में यह परिकल्पना की गई है कि हमारे संस्थानों के समान पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को, छात्रों में मौलिक कर्तव्यों के प्रति सम्मान की भावना पैदा करनी चाहिए और संवैधानिक मूल्यों, अपने देश और एक बदलती दुनिया के साथ एक संबंध पैदा करना चाहिए। इस नीति का दृष्टिकोण शिक्षार्थियों के बीच ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास, बुद्धि और कर्म के साथ न केवल विचार बल्कि मूल्यों और दृष्टिकोणों में भी विकास करना है, जो मानव अधिकारों, सतत विकास और जीवन का समर्थन करते हैं और वैश्विक कल्याण के लिए एक जिम्मेदार प्रतिबद्धता, जिससे वास्तव में एक वैश्विक नागरिक प्रतिबिंबित होता है। गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा का उद्देश्य, ऐसे व्यक्तियों का विकास करना होना चाहिए जो उत्कृष्ट, विचारशील और अच्छी रचनात्मक प्रवृत्ति के हों। यह एक व्यक्ति को रुचि के एक या एक से अधिक विशिष्ट जैसे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी, भाषा, व्यक्तिगत, तकनीकी, व्यावसायिक विषयों सहित क्षेत्रों में गहराई से अध्ययन करने और चरित्र, नैतिक और संवैधानिक मूल्यों, बौद्धिक जिज्ञासा, वैज्ञानिक स्वभाव, रचनात्मकता, सेवा भावना और 21 वीं सदी के कौशल को आवश्यक सीमा तक विकसित करने में सक्षम बनाती है। नई शिक्षा नीति वर्तमान प्रणाली में कुछ मौलिक परिवर्तन लाती है, और इसमें मुख्य आकर्षण बहु-विषयक विश्वविद्यालय और कॉलेज है, जिसमें प्रत्येक जिले में या

उसके पास कम से कम एक छात्र पाठ्यक्रम, शिक्षाशास्त्र, बेहतर छात्र अनुभव के लिए मूल्यांकन और समर्थन, एक महत्वपूर्ण प्रतिष्ठान शामिल है। नेशनल रिसर्च फाउंडेशन विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में उत्कृष्ट सहकर्मी-समीक्षा कार्य और प्रभावी ढंग से बीज अध्ययन का समर्थन करेगी।

‘मूल्य’ एक व्यापक शब्द है। जीवन मूल्यों का अभिप्राय हित, आनंद, वरीयताएं, कर्तव्य नैतिक दायित्व, आकांक्षाएं, अपेक्षाएं और आवश्यकताएं, नापसंद और बदलाव से है। मूल्य कर्म की दृष्टि से चयन के मापदण्ड होते हैं। वे यह बताते हैं कि कुछ विशेष परिस्थितियों में हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। प्रत्येक समाज के अपने सांस्कृतिक मूल्य, परम्पराएँ और मापदण्ड होते हैं। सामाजिक प्राणी के रूप में हम अपने परिवेश का अर्थ समझते हैं। इससे बालक समाज के नियमों को सीखते हैं। शिक्षा न केवल बालक को ज्ञान-प्रदान करती है तथापि उसके व्यवहारों, विचारों तथा व्यक्तित्व सम्बन्धी कारकों का भी पूर्णरूप से विकास करने में सहायक होती है।

1.2 शोध की आवश्यकता

मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत आस्था, विश्वास, लक्ष्य, सामाजिक परम्पराओं तथा पर्यावरण से सम्बन्धित होते हैं। ये मूल्य सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति में पहुँचते हैं। अतः आज हमारी शिक्षा प्रणाली अपना काम संभवतः ठीक प्रकार से नहीं कर रही है, क्योंकि प्रायः ऐसा प्रतीत होता है कि व्यक्ति इन मूल्यों से युक्त नहीं है। भारतीय जनमानस की स्थिति उस कस्तूरीमृग के समान है जिसकी नाभि में सुगन्धित ‘कस्तूरी’ के होते हुए भी वह उसी सुगन्ध को प्राप्त करने के लिये व्याकुल रहता है, एवं सुगन्ध को पाने के लिए घास सूँघता फिरता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में इन मूल्यों की चर्चा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। प्राचीन शिक्षा का सबसे बड़ा मूल्य “सा विद्या या विमुक्तये” अर्थात् ‘मुक्ति’ था। जिसमें मुक्ति का अर्थ सभी प्रकार के दुरूखों से छुटकारा अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति था। अनेक भारतीय शिक्षा आयोगों ने शिक्षा में मूल्यों की कमी बताकर उसे मूल्यों से पर्याप्त रूप से जोड़ने की बात कही तथा इस विषय में अपने अनेक सुझाव प्रस्तुत किये। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मूल्य परक शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया।

विभिन्न आयोगों की सिफारिशों एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा एन.सी.टी.ई. की योजनाओं को देखते हुए लगता है कि वर्तमान शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक मूल्यपरक होना चाहिए परन्तु समाज में भ्रष्टाचार, कुरीतियाँ, शोषण आदि प्रतिदिन व्यापक रूप में दृष्टिगत होती है। इसी विसंगति को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता को जिज्ञासा हुई कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों के स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

1.3 समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों के स्तर का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

1.4 शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों संबंधी विभिन्न आयामों (शैक्षिक, नैतिक, सामाजिक एवं राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक,

सौन्दर्यात्मक, पर्यावरणीय, स्वास्थ्य, बौद्धिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण) का लिंग भेद एवं विद्यालय क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र) के सन्दर्भ में अध्ययन करना।

1.5 शोध परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में कुल मूल्यों के निर्माण संबंधी विभिन्न आयामों के प्राप्तांक औसत स्तर के हैं।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के कुल मूल्यों के निर्माण संबंधी विभिन्न आयामों पर लिंग भेद के प्रभाव का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के कुल मूल्यों के निर्माण संबंधी विभिन्न आयामों पर विद्यालय क्षेत्र (ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

1.6 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

प्रत्येक शोध में सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन एक महत्वपूर्ण एवं तर्कयुक्त कार्य है। इससे समस्या की गहनता के साथ-साथ समस्या की स्पष्टता तथा शिक्षा जगत में उसके महत्व की जानकारी प्राप्त होती है। किसी भी शोध अध्ययन द्वारा माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के शिक्षण मूल्य को लेकर पृथक रूप से किसी प्रकार का शोध नहीं किया गया है। माध्यमिक शिक्षा एक अनिवार्य शिक्षा होने के कारण तथा बालकों के अधिगम स्वरूप एवं स्तर को देखते हुए पृथक से शिक्षक मूल्य का सम्प्रत्यय सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक रूप से प्रतिपादित करना आवश्यक है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों के शोध सम्प्रत्यय विकसित कर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

1.7 शोध में प्रयुक्त शब्दावली

माध्यमिक शिक्षा

नई शिक्षा नीति के अनुसार पहले आठ वर्षों की स्कूली शिक्षा को प्रारम्भिक शिक्षा कहते हैं। उसके पश्चात् कक्षा 9-12 तक के माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।

विद्यालय

सामान्यतः सरकारी एवं निजी क्षेत्र के ऐसे विद्यालय जिसमें बालक को प्रायः 5-6 घण्टे अध्ययन कराया जाता है, इसमें आवासीय नीति लागू नहीं होती है, इन विद्यालयों में भी बालक का शैक्षिक, सांस्कृतिक नैतिक विकास पर ध्यान दिया जाता है किन्तु इन विद्यालयों में विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर की गुणवत्ता पर ही विशेष बल दिया जाता है। इन विद्यालयों में सभी वर्गों के प्रतिभावान व सामान्य मानसिक स्तर के बालक-बालिकाओं को प्रवेश दिया जाता है।

विद्यालयों के संदर्भ में कुछ विद्वानों ने अपने मत इस प्रकार दिये हैं-
“स्कूल, वे शिक्षण संस्थाएँ हैं जिनको सभ्य मानव ने इस दृष्टि से स्थापित किया है कि समाज में सुव्यवस्थित तथा योग्य सदस्यता के लिए बालकों की तैयारी में सहायता मिल सके।”- जे.एम.रॉस

“स्कूल एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है जहाँ बालक के वांछित विकास की दृष्टि से उसे विशिष्ट क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा दी जाती है।”- जॉन डी.वी

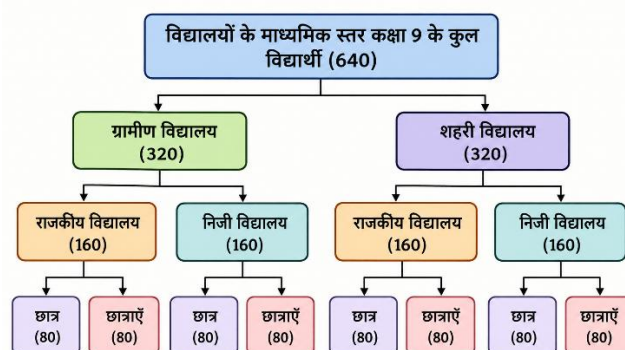
मूल्य -

‘मूल्य’ एक अमूर्तपूर्ण गुण है जो किसी वस्तु में निहित होता है तथा उसके महत्त्व की ओर इंगित करता है। प्रत्येक समाज के कुछ आदर्श हैं जिन पर सामाजिक प्रगति तथा परिवर्तन की दिशा निर्भर करती है। मूल्य निर्धारण में सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरोहर का भी महत्वपूर्ण योग होता है। इस प्रकार-“सामाजिक परिस्थितियों तथा विषयों के मूल्यांकन की प्रक्रिया को मूल्य कहते हैं।” जाति, समाज, राष्ट्र के मूल्यों में विभिन्नताएँ होते हुए भी, मानवीय मूल्य समान होते हैं। उदाहरणार्थ- अहिंसा, सत्य, अशौर्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, प्रेम, सहानुभूति, परोपकार दया आदि मानवतावादी मूल्य देश, काल, समाज की सीमा लांघ, समस्त दिशा के समान हैं।

1.8 शोध कार्य में प्रयुक्त विधि

अनुसंधान क्रियाविधि यह अध्ययन पाठ्य आलोचनात्मक, मूल्यांकनात्मक, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और व्याख्यात्मक विधियों का उपयोग करते हुए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से उच्च शिक्षा के विशेष संदर्भ के साथ एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण के रूप में नई शिक्षा नीति 2020 के संपूर्ण अध्ययन पर भी ध्यान केंद्रित करता है। इसमें एमएलए हैंडबुक ऑफ रिसर्च के 8वें संस्करण का सख्ती से पालन किया गया है। शोध प्रकृति, सर्वेक्षण की मौलिकता एवं उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी द्वारा वर्तमान शोध में अनुसंधान की ‘सर्वेक्षण विधि’ का प्रयोग किया जायेगा।

1.9 न्यादर्श



1.10 शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में मानकीकृत उपकरण का उपयोग किया गया।

1.11 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

किसी भी सामाजिक घटना का यथा तथ्य अध्ययन करने के लिये विधियों का प्रयोग किया जाता है। उसके संबंध में आंकड़े एकत्रित किये जाते हैं और उसका वर्गीकरण तथा सारणीयन करके, उन्हें सरल, व्यवस्थित एवं शोधगम्य बनाने का प्रयत्न किया जाता है ताकि उससे निष्कर्ष निकाले जा सकें। दत्त सामग्री के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी तकनीक का उपयोग किया जायेगा -

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. 'टी' परीक्षण (ज जमेज)

1.12 शोध परिसीमांकन

शोध प्रबन्ध को निम्न प्रकार से सीमांकित किया जाएगा:-

1. प्रस्तुत समस्या का क्षेत्र जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित रखा गया।
2. इस शोध प्रबन्ध में माध्यमिक विद्यालयों के लिंग भेद के प्रभाव का अध्ययन किया गया।
3. इस शोध प्रबन्ध में शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय एवं ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया।
4. प्रस्तुत शोध कार्य हेतु के मूल्य मापन के लिये का मानकीकृत मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया।

1.13 वर्तमान अध्ययन के शोध निष्कर्ष

किसी भी कार्य का सार्थक परिणाम उसका निष्कर्ष होता है। इसके अभाव में कार्य का प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता है। प्रस्तुत शोध कार्य में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में मूल्यों का अध्ययन किया गया। अध्ययन के निर्धारित उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु संकलित दत्तों के विश्लेषण एवं निर्वचन की प्रक्रिया से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए:-

माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के मूल्यों व उसके आयामों का अध्ययन

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में मूल्य संबंधी विभिन्न आयामों सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक मूल्य के प्राप्तांक औसत से अधिक है। सुखवादी मूल्य आयाम के औसत प्राप्तांक से कम है।

माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में मूल्यों संबंधी आयामों पर लिंग भेद का प्रभाव

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कुल मूल्य एवं विभिन्न आयामों सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक मूल्य एवं सुखवादी मूल्य के प्राप्तांकों पर लिंग भेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

माध्यमिक विद्यालयों के कुल विद्यार्थियों में मूल्यों संबंधी आयामों पर क्षेत्रीय भिन्नता (ग्रामीण एवं शहरी) का प्रभाव

माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कुल मूल्य एवं विभिन्न आयामों सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक मूल्य के प्राप्तांकों पर लिंग भेद का कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि आर्थिक मूल्य एवं सुखवादी मूल्य के प्राप्तांकों पर लिंग भेद का सार्थक अंतर पाया गया है।

1.14 शैक्षिक निहितार्थ

मूल्यों की शिक्षा वर्तमान समय की मांग है साथ ही देश के भविष्य को पाश्चात्य प्रभाव से सुरक्षित रखने का माध्यम है। विद्यालय की प्रत्येक गतिविधि अध्यापकों से छात्र/छात्राओं में किसी ना किसी मूल्य के निर्माण में योगदान देती है, मूल्यों की शिक्षा के छात्रों के वांछित व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सकता है और शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त किया जा सकता है। केवल विद्यालयी गतिविधियां ही ग्रामीण एवं शहरी छात्रों में मूल्यों के अंतर को दूर कर सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल वीपी. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के चार वर्षीय एकीकृत बीएससी, बीएड विद्यार्थियों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति, शिक्षण व्यावसायिक अभियोग्यता, व्यक्तित्व गुण, व्यावसायिक दक्षता एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति वचनबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन. जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च. 2002;9(1):13-18.
2. अरोड़ा आरकेएस. वर्तमान प्रचलित शिक्षा पाठ्यचर्या का परीक्षण, उभरते शैक्षिक संदर्भ एवं अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का, अध्यापकों की परिवर्तित संदर्भ व्यावसायिक आवश्यकता के संदर्भ में—एक अध्ययन. शोध परियोजना. अजमेर: क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान; 2006.
3. बजवा एम. एक दक्षता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम की रणनीतिक योजना. शिक्षा. 2003;16(4):481-502.
4. भट्टाचार्य जेएस. चार वर्षीय एकीकृत बीएससी, बीएड कार्यक्रम एवं एक वर्षीय बीएड कार्यक्रम के मध्य शिक्षण व्यवसाय में शिक्षण की सफलता के कारकों के संदर्भ में एक तुलनात्मक अध्ययन. शोध परियोजना. अजमेर: क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान; 2002.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution-Non-Commercial-No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the author



ममता मीणा शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत में शोधार्थी हैं। वे शिक्षा के क्षेत्र में शोध कार्य कर रही हैं तथा शैक्षिक विषयों के अध्ययन, विश्लेषण और अनुसंधान में रुचि रखती हैं। उनका अकादमिक कार्य शिक्षा संबंधी विभिन्न पहलुओं को समझने, शोधपरक दृष्टिकोण विकसित करने और ज्ञान के क्षेत्र में योगदान देने पर केंद्रित है।